# LINGUISTIC SURVEY OF INDIA

VOL. IX

# INDO-ARYAN FAMILY

CENTRAL GROUP

## PART II

# SPECIMENS OF THE RAJASTHANI AND GUJARATI

COLLECTED AND EDITED BY

G. A. GRIERSON, C.I.E., PH.D., D.LITT., I.C.S. (RETD.)

HONOBARY MEMBER OF THE ASIATIC SOCIETY OF BENGAL, OF THE NAGARI PRACHARINI SABHA, AND OF THE AMERICAN ORIENTAL SOCIETY; ASSOCIATE FOREIGN MEMBER OF THE SOCIÉTÉ ASIATIQUE DE PARIS; CORRESPONDING MEMBER OF THE KÖNIGLICHE GESELLSCHAFT DER WISSENSCHAFTEN ZU GÖTTINGEN



## MĀRWĀŖĪ OF KISHANGARH (GŌŖĀWĀŢĪ) AND OF AJMER.

These two dialects may be considered together. They are much more free from Jaipuri than the dialect shown in the preceding pages.

As a specimen I give a short folk-song from Ajmer. It is not exactly teetotal in its sentiments, but its language is unexceptional as an example of dialect. Notice the frequent use of expletive additions, such as  $n\bar{\imath}$ ,  $j\bar{\imath}$ , and  $r\bar{\imath}$  (feminine ri). The last termination has been already discussed in the Mārwārī grammar (see p. 30). It is also employed in Jaipurī, usually in a contemptuous sense. Here it is more endearing than contemptuous. Thus,  $d\bar{\alpha}ru-r\bar{\imath}$  might be translated 'a dear little drop of wine.' We may also note the way in which the first person plural is employed in the sense of the singular.

[ No. 3.]

### INDO-ARYAN FAMILY.

CENTRAL GROUP.

RĀJASTHĀNĪ.

Mārwārī (Eastern).

DISTRICT AJMER.

अमलाँ-मैं आका लागो म्हारा राज। पीवो-नी दार्-ड़ी॥
सुरज या-नै पुजस्याँ-जी भर मोत्याँ-को याल। घड़ेक मोड़ा उगजो-जी पिया-जी म्हारे पास।
पीवो-नी दार्-ड़ी। अमलाँ-मैं आका लागो म्हारा राज। पीवो-नी दार्-ड़ी॥
जा एँ दासी बाग-मैं ओर सुण राजन-री बात। कदेक महल पधारसी तो मतवाको धणराज। पीवो-नी दार्-ड़ी। अमलाँ-मैं आका लागो म्हारा राज। पीवो-नी दार्-ड़ी॥
यारी ओकूँ म्हे कराँ म्हारी करै न कोय। यारी ओकूँ म्हे कराँ करता करै जो होय।
पीवो-नी दार्-ड़ी। अमलाँ-मैं आका लागो म्हारा राज। पीवो-नी दार्-ड़ी॥

#### TRANSLITERATION AND TRANSLATION.

Amala-măï āchhā lāgō, mhārā rāj; pīwō-nī Intoxication (of-opium)-in nice you-appear, my Lord: do-drink dāru-rī. wine. pūjasyã-jī thā-năĩ bhar mötyã-kō Suraj! thāl; we-will-worship having-filled pearls-of you-to O-Sun! a-dish: ūgajo-jī; gharek morā piyā-jī māhrăĭ pās; (as-my)-husband about-a-ghari late rise-please; to-me near (is); amala-măř āchhā lägō dāru-rī; mhārā pīwō-nī rāj; intoxication (of-opium)-in nice wine; you-appear do-drink my Lord; dāru-ŗī. pīwō-nī do-drink wine.

The verb  $d\bar{e}n\bar{o}$ , to give, makes its past tense  $d\bar{i}d\bar{o}$ , he gave, and similarly we have  $k\bar{i}d\bar{o}$ , he made.

The word for 'and' is the Jaipuri ar or har.

It will be sufficient to give a portion of a version of the Parable as a specimen of Mēwāṛī.

[ No. 5.]

## INDO-ARYAN FAMILY.

CENTRAL GROUP.

RĀJASTHĀNĪ.

MĒWĀŖĪ.

STATE UDAIPUR.

कुणी मनख-के दोय बेटा हा। वाँ-माँ-हूँ ल्होड़क्यो आप-का बाप-ने कह्यो है बाप पूँजी-माँ-हूँ जो म्हारी पाँती होवै म्ह-ने द्यो। जद वाँ वाँ-ने आप-की पूँजी बाँट दीदी। योड़ा दन नहीं हुया हा के ल्होड़क्यो बेटो सगळी धन भेळी करहर परदेस परो-गयो ग्रर उठे लुचापण-माँ दन गमावता हुवाँ आप-को सगळी धन उडाय दीदो। जद क सगळो धन उडा चुक्यो तद वीँ देस-माँ भारी काळ पड़्यो हर क टोटायलो हो-गयो। हर क जाय-ने वा देस-का रहवावाळाँ-माँ-हूँ एक-के नखेँ रहवा लाग्यो। वाँ वाँ-ने आप-का खेत-माँ स्र चराबा-ने मिल्यो। हर क वाँ छूँतरा-हूँ ज्याँ-ने स्र खावा-हा आप-को पेट भरबो चावो-हो। हर वा-ने कोई भी काँई नहीं देतो-हो। जद वाँ-ने चेत हुयो हर वीँ कह्यो के म्हारा बाप-के कतरा-ही दानक्याँ-ने खाबा-हूँ बदती रोटी मिळे-हे हर हूँ भखाँ मक। हूँ कठर म्हारा बाप नखेँ जाऊँलो हर वा-ने कहूँलो के है बाप बेतुंठहूँ- उलटो हर आप-के देखताँ पाप कीदो-है। हूँ फेक्ट आप-को वेटो कुहाबा जोगो नहीं हूँ। म्ह-ने आप-का दानक्याँ-माँ-हूँ एक-के सरीखो कर-द्यो॥

#### JAIPURĪ (CHAURĀSĪ).

The Chaurāsī form of Jaipurī is spoken immediately to the south of Kāṭhaiṛā, on the border of the Kishangarh State, in the Thakurate of Lawa, and in the portion of the Tonk State which forms an enclave in the Jaipur State. It is spoken by the following estimated number of people:—

In Jaipur Territory							98,773
In Lawa Territory							3,360
In Tonk Territory							80,000
					TOTAL		182,133

Chaurāsī differs hardly at all from Standard Jaipurī.

The only peculiarities of grammar which I have noticed are that the second personal pronoun is  $t\tilde{u}$ , not  $t\tilde{u}$ , and that the interrogative pronoun kun, who? has an oblique form kun. Further particulars will be found on pp. 54 and 55 of Mr. Macalister's Grammar.

The specimen is a portion of a folktale, and has been provided by Mr. Macalister.

[No. 27.]

#### INDO-ARYAN FAMILY.

CENTRAL GROUP.

RĀJASTHĀNĪ.

JAIPURĪ (CHAURĀSĪ).

JAIPUR STATE.

(Rev. G. Macalister, M.A., 1899.)

दल्ली देखवा गियो जाट घोड़ी पर चडर । कोई दनाँ-मेँ, कोस तीनेक उड़े पूँछो । रात पड़-गी । उड़े-ई रै-ग्यो । भाग-फाटीर ज्ञा दल्ली-के गैले लाग-ग्यो । कोसेक री दल्ली घर उड़ो-सूँ दल्ली केनी-सूँ वाँग्यूँ मळ-ग्यो ! सो बाँग्याँ-के या पणवरत सो कोई बोल-ले दनुग्याँ पैली तो कँ-के बैम पड़-जाय । सो कोई-सूँ बोले कोने । ज बगत-का सो यो जाट चालतो-ई माजन-ने कियो के राम राम । जद ई गाळ काड़ी । जद जाट जूता-की दीनी । जद कोस ताँई जाट तो घोड़ी-सूँ उतरर जूताँ-सूँ कूटतो गियो ग्रर यो गाळ काड्याँ गियो । जद दल्ली-के दक्त जाताँ जाताँ दन ग्राँथ ग्यो । उड़े सपाई बोल्या क्यों लड़ो-को रे । जद बाँग्यूँ बोल्यो मा-ले जूलाँ-की पड़ी । जती खाँ-जी थाँ-के पड़े तो का-जागाँ काई वहै । जद मीँयाँ बोल्यो मा-ले जूलाँ-की पड़ी । जद मीँयाँ बोल्यो थे लड़ता लड़ता ग्रव कड़े जास्यो । जद वाँग्यूँ बोल्यो मारा कोटवाळी-मेँ ले-जास्यूँ । जद मीँयाँ बोल्यो कोटवाळी-मेँ तो मत जावो । ग्रर वा मत्यारी के जीं-के तो जाट-ने कै-दे तूँ जा ग्रर तूँ यारे घराँ चळ्यो-जा ग्रर दन्नूग्याँई भव्यारी-का-सूँ जाट-ने पकड़ ल्याजे । ग्रर कं बगत-का-ई कोटवाळी-मेँ ले-जाजे सो न्याव हो-जासी । ग्रर ग्रवार घे कोटवाळी-मेँ जास्यो तो दोन्याँ-के चठा-देसी ग्रर न्याव दन्नूग्याँ होसी । जद जाट तो भव्यारी-के चळ्यो-गियो ग्रर वांग्युँ बांग्याँ की चराँ चळ्यो-गियो । भव्यारी रात-की बगत जाट-ने रोव्याँ चोखी खुवाई । रात-की रात तो रोव्यां खार सो-गियो । स्वारी रात-की ग्रत जाट-ने रोव्यां चोखी खुवाई । रात-की रात तो रोव्यां खार सो-गियो । रन जग्यो ग्रर वांग्यूँ ग्रायो घराँ-मूँ । चाल कठ कोटवाळी-मेँ चालाँ